International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 (www.ijsrset.com)

Comparative Study of Basic Level Teachers' Aptitude for Environmental Education

[बेसिक स्तर के अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन]

कुसुम देवी
शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानिक विश्वविद्यालय, जमुनीपुर कोटवा प्रयागराज उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 8 Issue 2
Page Number: 231-232
Publication Issue :
March-April-2021
Article History
Accepted : 05 April 2021
Published : 08 April 2021

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा " बेसिक स्तर के अध्यापकों का पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना " पर किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत प्रयागराज जनपद के जसरा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालयों मे कार्यरत अध्यापकों को समष्टि के रूप में लिया गया है। जिसमें प्रतिचयन विधि द्वारा 200 अध्यापकों को न्यायर्श के रूप में चयनित किया गया है। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा डॉ० टी ० एस० सोधी एवं डॉ० जी० डी ० शर्मा द्वारा बनाई गई अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग शोधार्थिनी ने किया है। अभिवृत्ति मापने के लिए काई वर्ग सांख्यिकी का प्रयोग करने पर शोध निष्कर्ष में पाया गया कि बेसिक स्तर के अध्यापकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान होती है ।

Keywords : प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राइमरी विद्यालय ,अध्यापक ,पर्यावरण शिक्षा , अभिवृत्ति , मुख्य शब्द है।

I. INTRODUCTION

प्रस्तावना :

"पर्यावरण "(Environment) :

आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण की है। पर्यावरण के कारण विश्व में तमाम समस्याएं जन्म ले रही हैं। पर्यावरण के द्वारा ही प्राकृतिक संसाधनों का संचालन होता है। पर्यावरण में अनेक तत्वों के माध्यम से पार्थिव एकता दिखाई पड़ती है। पर्यावरण मानव जीवन का आधार है बल्कि वह पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव जंतुओं एवं वनस्पतियों के विकास एवं उनके अस्तित्व को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है । आज तक मानव ने जो प्रगति कि है उसमे पर्यावरण की महती भूमिका रही है। पर्यावरण परी + आवरण से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है "चारों ओर से घिरा हुआ"।

" शिक्षा " (Education) :

शिक्षा मानव को एक सच्चा इंसान बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पशु से भिन्न होता है। शिक्षा व्यक्तित्व का विकास करने वाली वह वह प्रक्रिया है जिसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने में अपना योगदान देती है। शिक्षा "शिक्ष" धातु में अ प्रत्यय लगाने से बना है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ "सीखना और सिखाना " होता है। शिक्षा शब्द का अर्थ सीखने सिखाने की प्रक्रिया से लगाया जाता है।

"पर्यावरण शिक्षा "(Environment Education) :

पर्यावरण शिक्षा का व्यापक अर्थ है जो अपने में पूरी की पूरी व्यवस्था को संजोए हुए हैं । पर्यावरण शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो पर्यावरण के माध्यम से पर्यावरण के विषय में और पर्यावरण के लिए होती है। पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत मनुष्य तथा उसके पर्यावरण के पारस्परिक संबंध तथा निर्भरता को समझने का प्रयास किया जाता है। और पर्यावरण शिक्षा को स्पष्ट करने के लिए कौशल अभिवृत्ति तथा मूल्यों का विकास आवश्यक होता है।

"यूनेस्को का फिनिश नेशनल कमीशन" पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। पर्यावरण शिक्षा को हम विज्ञान अथवा कला से अलग नहीं कर सकते हैं। हमें पर्यावरण शिक्षा को एक जीवन पर्यंत संपूर्ण शिक्षा के अंतर्गत चलाना चाहिए। पर्यावरण के द्वारा ही हम अपने और आगे आने वाली पीढ़ियों को जीवंत कर सकते हैं। पर्यावरण शिक्षा द्वारा सिखाने और सीखने का प्रयास किया जा सकता है। प्रकृति हमे हर रूप में कुछ ना कुछ अनुभव कराती है। यह हमें सोचना होगा कि प्रकृति का कौन सा रूप

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हमें क्या सिखाने वाला है । पर्यावरण शिक्षा को हम साधारण विद्यालय प्रणाली के अंतर्गत प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्च तक ही चलाते रहे हैं । परंतु आज उसे अधिक से अधिक व्यापक बनाए जाने की आवश्यकता है जिसे हम मीडिया , वेबसाइट आदि के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा को लोगों तक पहुंचा सकते हैं । आज मानव कल्पना एवं संपूर्ण वातावरण को सुरक्षित करने हेतु पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक एवं दिशात्मक प्रयास करना पर्यावरण शिक्षा के बिना संभव ही नहीं है । अतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण शिक्षा आज के समय के लिए निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है । जिसके लिए शोधार्थिनी इस शोध पत्र के माध्यम से प्रयास किया है ।

अध्ययन का उद्देश्य :

बेसिक स्तर के अध्यापकों का पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना , शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य है ।

परिकल्पना :

बेसिक स्तर के अध्यापकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

अनुसंधान प्रविधि :

प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए प्रयागराज जनपद के जसरा ब्लाक के बेसिक स्तर मे कार्यरत अध्यापकों को अभ्यंश प्रतिचयन न्यायर्श का प्रयोग करते हुए 200 अध्यापकों का प्रदत्त संग्रह हेतु किया गया है । जिसके लिए डॉ० टी० एस ० सोधी एवं डॉ ० जी० डी ० शर्मा द्वारा निर्मित पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया ।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या :

अभिवृत्ति मापनी द्वारा संग्रहित आंकडो का विश्लेषण अप्रांचल सांख्यिकी के काई वर्ग का प्रयोग करते हुए किया गया है ।

"विश्लेषित प्रदत्त की सारणी"

बेसिक स्तर के अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना :

अध्यापकों का समूह	पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिकतम	निम्नतम	योग
पुरूष	78 (78%)	22 (22%)	100
महिला	80 (80%)	20 (20%)	100
योग	158 (79%)	42 (42%)	200

X2 = 0 •Adf (3•481 at •05 स्तर का महत्व)

विश्लेषित प्रदत्त सारणी से यह स्पष्ट है कि पुरुष अध्यापकों का अधिकतम अभिवृत्ति पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक मात्रा 78 थी । जबकि निम्नतम अभिवृत्ति पर पुरुष अध्यापको की कुल संख्या 22 थी । इसी तरह से महिला अध्यापकों में देखा जाए तो अधिकतम अभिवृत्ति 80 थी ,जबकि निम्नतम अभिवृत्ति कुल 20 थी । जबकि इनके बीच अभिकल्पित x2 की गणना हुई तो इसका मान 0-17 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थक स्तर पर 3:481 से कम था । जिससे बनाई गई शून्य परिकल्पना स्वीकार कर ली गई । अतः स्पष्ट हो गया कि पुरुष और महिला अध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान स्तर की होती है ।

संम्बन्धित शोधों का अध्ययन करने पर पाया गया कि ऐसे ही परिणाम अख्तर एवं इस्लाम 1972 ईस्वी के शोध में थे । जो प्रस्तुत शोध अध्ययन का समर्थन करते हैं ।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत् यह कहा जा सकता है कि अध्यापक समूह राष्ट्र का निर्माता होता है । उसके कंधों पर देश के भविष्य का बोझ होता है । अध्यापक और बेसिक का हो तो यह जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है । क्योंकि नौनिहाल बच्चों को पर्यावरण की शिक्षा देना बहुत कठिन होता है । परंतु बेसिक अध्यापक अपने कर्तव्य को निभाता है और एक राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है । पर्यावरण शिक्षा के लिए शैक्षिक संसाधन और उसको सुचारू रूप से क्रियान्वयन के लिए जन धन की आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिए । जिससे पर्यावरण के साथ साथ वातावरण को स्वच्छ बनाया जा सके और जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके । इसके लिए अध्यापक से बेहतर कोई नहीं समझ सकता । अतः बेसिक स्तर के अध्यापकों मे पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति समान होती है ।

सुझाव :

(1). बेसिक अध्यापकों को अधिक से अधिक पर्यावरण शिक्षा के विषय में अवगत कराया जाए ।

(2). @ विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा से संबंधित सहायक सामग्री को उपलब्ध कराया जाए ।

II. REFERENCES

[1]. बुच , एम.वी . :फर्स्ट सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन ।

[2]. राय, पी. एन. : अनुसंधान परिचय ।

[3]. गिलफर्ड ,एच. ई. : स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एंड एजुकेशन ।

[4]. बुडको, एम .आई . : जलवायु और जीवन, न्यूयॉर्क अकादमी प्रेस ,1974 ,।

[5]. चैलेंज, ई .टी . : पर्यावरण संरक्षण, न्यूयॉर्क , मैकग्रा हिल , 1979 '।

[6]. ओडुम ,ई.पी . : पारिस्थितिकी के मूल तत्व ।

[7]. पार्क ,सी .सी . : पारिस्थितिकी और पर्यावरण प्रबंधन, ।

[8]. सिंह, जे. : पर्यावरण योजना और पर्यावरण विकास ,।

[9]. वाल्डवाट , जी. एल . :पर्यावरण प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभाव, 1978 ।